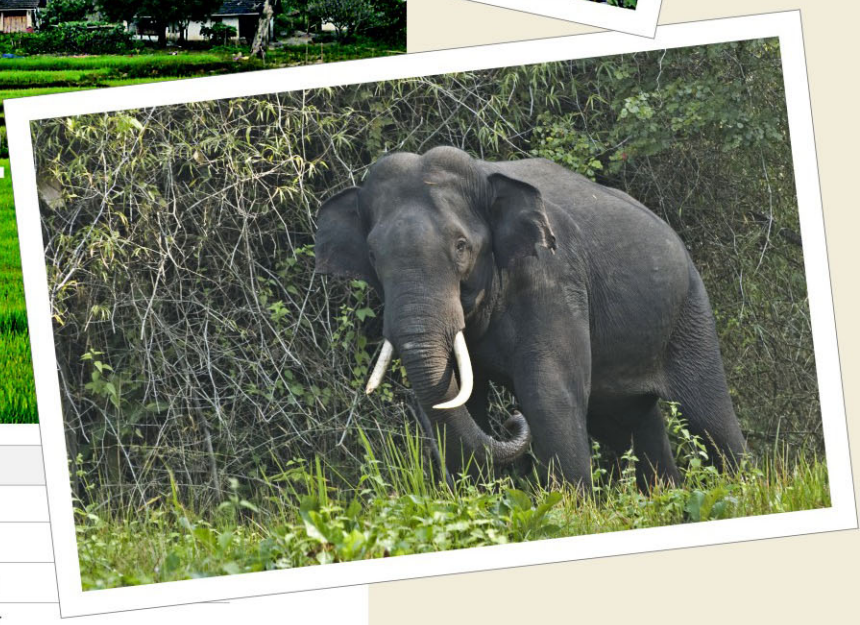

आमोद कारखानिस

मेरी डायरी के कुछ पन्ने...

20 नवम्बर

हम वायनाड (केरल) अभयारण्य के थोलापट्टी रेंज में हैं। बारिश अभी-अभी खत्म हुई है। सब जगह बड़ी-बड़ी घास उग आई है। लेंटाना जैसी झाड़ियाँ भी काफी बढ़ गई हैं। ऐसे जंगल में हरियाली के अलावा कुछ और दिख पाना काफी मुश्किल होगा। जानवर देखने हैं तो...। तो किसी बड़े जानवर को ही तलाशना होगा। और हाथी से बड़ा भला क्या हो सकता है! तो हम निकले हाथी तलाशने...।

यह काम ज़्यादा मुश्किल नहीं लग रहा था। एक तो इस जंगल में हाथियों की तादाद काफी है, और दूसरा जीप होने के कारण हम काफी दूरी तय कर सकते थे। लगता है किस्मत हमारे साथ थी। कैम्प से थोड़ी दूर ही एक बड़ा हाथी दिखा। रास्ते के बीचोंबीच खड़ा होकर वह पास की घास खा रहा था। काफी बुज़ुर्ग हाथी लग रहा था वो। कई सारी लड़ाइयों के निशान उसके शरीर पर दिख रहे थे – कटी हुई पूँछ, कान का एक हिस्सा फटा हुआ, कँधे पर छोटा-सा ताज़ा ज़ख्म। झुण्ड का नायक बनने के लिए या मादा को पाने के लिए लड़ी लड़ाई के निशान। फटे कान से लग रहा था कि शायद किसी कसाई से भी पाला पड़ा होगा कभी। उसने हमें देखा तो, पर अनदेखा कर अपना काम जारी रखा। हम रुके रहे – और कर भी क्या सकते थे, जब आपके सामने आपसे सौ गुना भारी जानवर खड़ा हो। तो हम रुके रहे, साहब के घास खाकर धीरे-धीरे दूर हटने तक।

आज का दिन अच्छा रहा। आगे हमें जंगली भैंसों का एक झुण्ड दिखाई दिया। यह बड़ा ताकतवर जीव है और झुण्डों में रहता है। हाथी और जंगली भैंसें दोनों ही शाकाहारी हैं लेकिन हमारे जंगलों में देखो कितने प्रेम-प्यार से साथ-साथ रहते हैं।

कुछ जंगली मुर्गे, चीतल का झुण्ड और एक हिरण भी दिखा। एक दिन में इससे ज़्यादा और क्या चाहिए?

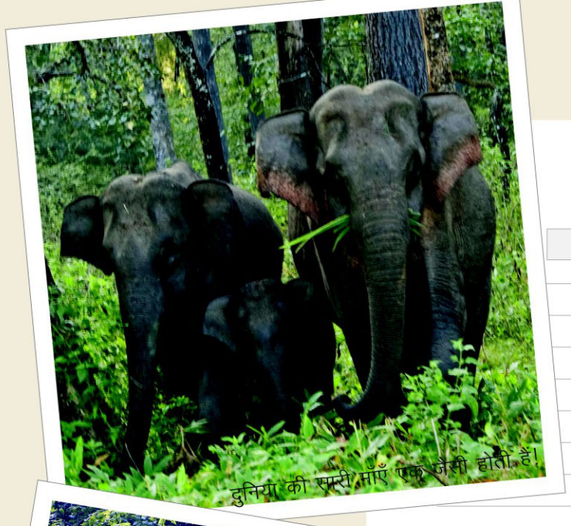
दुनिया की सारी माँएँ एक जैसी होती हैं।

इस तस्वीर को कैसे भूल सकता हूँ!

आज पौ फटते ही निकल पड़े। थोड़ा अलग रास्ता चुना। और इसका ईनाम भी तुरन्त मिला। एक मोड़ पर पहुँचते ही हाथी का एक छोटा-सा परिवार पास की घास से निकलता दिखाई दिया। उन्होंने हमारे सामने से ही रास्ता पार किया। फोटो में देखो कि मादा हाथी बच्चे को किस तरह बचाते हुए चल रही है। सिर्फ मादा ही नहीं झुण्ड के सभी सदस्य बच्चों की सुरक्षा के प्रति काफी सजग रहते हैं। झुण्ड में छोटे बच्चे हमेशा बीच में चलते हैं। बच्चा अपनी ही मस्ती में इधर-उधर भागने, दौड़ने में लगा है। शायद अभी तक उसे अपनी सूँड का ठीक से इस्तेमाल करना नहीं आया है। अपनी सूँड को हवा में इधर-उधर, नीचे हिलाकर वो खुद ही हैरान हुए जा रहा है। जैसे ही वो आगे भागता, उसकी पूँछ पकड़कर माँ उसे अपने पास खींच लाती। लगता है दुनिया की सारी माँएँ एक जैसी होती हैं।

हम आगे बढ़े। काफी देर ढूँढने के बाद एक हाथी दिखा। बड़े नर हाथी अक्सर अकेले रहते हैं। मादा से जोड़ा बनाने के लिए या प्रवास के समय ही वे झुण्ड में शामिल होते हैं। वन-विभाग के हमारे गाइड ने शायद इसे पहले भी देखा था। भारतीय हाथियों में केवल नर हाथी के ही दाँत होते हैं। सभी हाथियों के दाँतों का आकार अलग-अलग होता है। हाथियों को उनके दाँत से पहचाना जा सकता है – बिल्कुल हमारी उँगलियों की छाप की तरह।

यह हाथी बाँस के झुरमुट में था और उसके तने खा रहा था। अच्छी तस्वीर ली जा सकती है। पर हाथी छाँव में खड़ा था सिर्फ पिछले बाँस पर धूप थी। एक तो हाथी का रंग काला और ऊपर से छाँव में खड़े होने के कारण उस पर रोशनी भी नहीं पड़ रही थी। मुख्य चीज़ (हाथी) को छोड़कर बाकी सभी चमकें... नहीं- नहीं, मज़ा नहीं आएगा... थोड़ा आगे बढ़कर देखते हैं... नहीं, कुछ खास सम्भव नहीं है। हाँ, अगर वो थोड़ा आगे आ जाए तो एक अच्छी फोटो ली जा सकती है। चलिए इन्तज़ार करते हैं!

वन्यजीवों की फोटो खींचने वाले को बहुत सारे धीरज और थोड़ी-सी किस्मत की ज़रूरत होती है। उस के हाथ में न तो रोशनी की स्थिति होती है और न ही वो अपने सामने वाले को सही तरह से चलने-बैठने-खाने-सोने-मुस्कुराने के लिए कह सकता है। उस के हाथ में होता है सिर्फ इन्तज़ार और सही समय पर क्लिक करने की चपलता। बावजूद इस के हर बार अच्छी तस्वीर मिलेगी ऐसा नहीं होता है। हो सकता है आप उसके थोड़ा आगे आने की राह देख रहे हैं और वो आपसे देर तक इन्तज़ार कराने के बाद मुड़ कर चला ही जाए।

तो फिलहाल हम इन्तज़ार कर रहे थे। काफी देर तक मस्ती से बाँस खाने के बाद जनाब थोड़ा आगे आए। आगे एक छोटी-सी नाली थी। हाँ, इसी क्षण का तो हमें कब से इन्तज़ार था। उसे अच्छी तरह से देख पाऊँ इसलिए मैं जीप के पिछले दरवाज़े पर खड़ा हो गया। एक हाथ से छत की डण्डी पकड़े और दूसरे हाथ से कैमरा पकड़े यह तस्वीर (फोटो-1) खींची । बताओ कैसी रही?

शायद इस तरह मेरा छत पर चढ़ना हाथी को भाया नहीं। वैसे ही हम काफी देर से वहाँ खड़े हैं – शायद यह भी उसे अच्छा न लग रहा हो। पर हमने डटकर तस्वीरें लीं। अचानक हमारा गाइड चिल्लाया, "ओडीप्पो आना कुत्तान वरुन्ना... " (भागो, भागो... हाथी आ रहा है)। हाथी ने अपनी पूँछ तानी, कान खड़े किए और हमारी तरफ दौड़ने लगा। यह सब इतना अचानक हुआ कि हम सकते में आ गए। ड्राइवर ने तत्परता दिखाते हुए गाड़ी रिवर्स गियर में डाली और ज़ोर से एक्सीलेटर दबाया। जंगल का ऊबड़-खाबड़ रास्ता, मोड़, रिवर्स में चलती जीप, सामने से भागता आता हाथी और पीछे लटके दो फोटोग्राफर – काफी अजीबोगरीब दृश्य रहा होगा। मैं जैसे-तैसे एक हाथ से जीप की डण्डी और दूसरे हाथ से कैमरा सम्भालने की कोशिश कर रहा था। हमारा ड्राइवर आधा पीछे और आधा सामने से आती 30 टन की कयामत को देखते गाड़ी दबाए जा रहा था। तकरीबन एक किलोमीटर तक हम इसी तरह चले। तब जाकर जीप ने रफ्तार पकड़ी। फासला थोड़ा बढ़ा तो गाइड चिल्लाया, "slow down धीरे करो।" "अरे, धीरे क्या करो! रफ्तार कम हुई तो वो सामने वाला एक मिनट में जीप का पापड़ बना देगा।" पर यह सोचने का वक्त नहीं था। गाइड को जंगल का ज़्यादा अनुभव है। गाइड ने पीछे की तरफ से एक और हाथी को रास्ते की ओर आते हुए देखा। क्या हम दो हाथियों के बीच फँस जाएँगे? फिर तो बचना मुश्किल है।

हमें इतनी दूर खदेड़कर शायद वह हाथी अब दूसरे के इलाके में नहीं जाना चाहता था। वो रुक गया।

कैम्प में पहुँचकर हमने यह घटना औरों को बताई। फिर तो हर कोई शुरू हो गया। सब के पास ऐसे किस्सों की भरमार थी। इस जगह पर इंसान और हाथियों के बीच के संघर्षों की कई घटनाएँ हुई हैं। लोगों का कहना है कि हाथी कई बार जंगल से निकलकर गाँव-खेतों में घुस आते हैं। उनसे बचने के लिए बिजली की बागड़ या पटाखे इस्तेमाल किए जाते हैं। परन्तु यह कोई स्थाई इलाज नहीं है। हाथी के जंगल सिकुड़ते जा रहे हैं। उनके चारों ओर कॉफी या चाय के बगान बढ़ते जा रहे हैं। हाथियों के सालों से बने प्रवास के रास्तों के बीच गाँव, खेत आने लगे हैं। गर्मियों में जब जंगल की घास, पानी खत्म हो जाता है तो हाथी और क्या करेंगे? सिवाए पास के लहलहाते खेतों की ओर मुड़ने के!

समस्या का समाधान है जंगलों की रक्षा, एक से दूसरे जंगल में आने-जाने वाले इनके रास्तों को उन्हें उपलब्ध कराना। धीरे-धीरे लोग इस बात को गम्भीरता से ले रहे हैं। सतर्क हो रहे हैं। उनका वन्य प्राणियों को देखने का रवैया बदल रहा है। हमें विश्वास है कि आने वाले सालों में जब हम वापिस आएँगे यह शानदार गजराज हमें इसी तरह धम्मक-धम्मक आता दिखाई देगा। आमीन... चकमक

जंगली भैंस

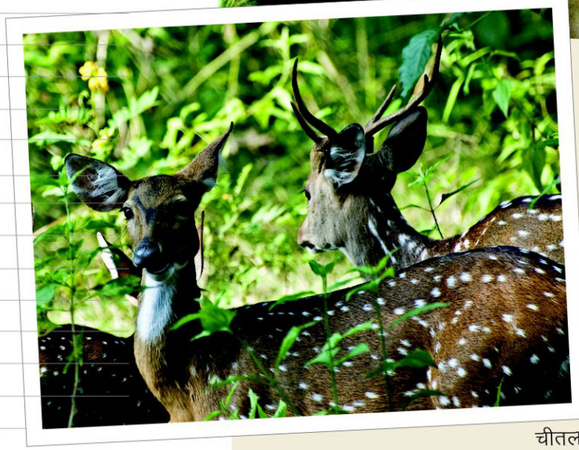
चीतल

सभी चित्रः अतनु राय
सभी फोटोः आमोद कारखानिस